ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थई ऊभा रेहेजो।
जो जोर घणुं आवे तमने, त्यारे तमे अमने केहेजो।। ५ ।।

इसलिए आप अपने चरणों को हिलने नहीं देना और स्थिरता से खड़े रहना। यदि आपको चरण खींचने से कष्ट मालूम हो तो हमें कहना।

अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे।
वालो सखियो सहुथाजो सावचेत, ओलियो ऊपर सामी हांसी कीजे।। ६ ।।

बहुत-सी सखियां चरणों से लिपट गईं और हिलने नहीं देतीं। हे वालाजी और हे सखियो! सावधान हो जाओ। हारने वाले की हंसी होगी।

जे सखी सांची थई ने वलगी, ते ता वछोडतां नव छूटे रे।
ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते ता उठाडता नव उठे रे।। ७ ।।

जो सखी सच्चे दिल से चरणों से लिपटी है, वह छुड़ाने पर भी नहीं छूटती है। दूसरी खींचने वाली सखियां ताकत लगा-लगाकर थक गईं, फिर भी उठाने पर नहीं उठतीं।

जे सखी चरणे रही नव सकी, ते पर हांसी थई अति जोर।
इंद्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर रे।। ८ ।।

जो सखी चरण पकड़कर नहीं रह सकी। उसकी बड़ी जोरदार हंसी हुई। श्री इन्द्रावतीजी, वालाजी और सखियां ताली बजा-बजाकर हंस-हंसकर शोर मचाते हैं।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

राग आसावरी

रामत उडन खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे।
रेत रूडी छे आणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, हम उडन खाटली (हिरन के समान लम्बी छलांग) की रामत खेलें। इस भूमि की रेत बड़ी अच्छी है, हम मृग की तरह छलांग लगाएं।

सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख रे।
साथ सहु रब्दीने रमसुं, मारा वालाजी सनमुख रे।। २ ।।

सखियों को मन में बड़ा आनन्द हुआ कि यह रामत अति सुखदाई है। मेरे वालाजी के सामने सब प्रतियोगिता से कूदेंगे।

पेहेलो ठेक दीधो मारे वाले, पछे जो जो ठेक अमारो रे।
तो मारा वचन मानजो सखियो, जो दऊं ठेक वालाजीथी सारो रे।। ३ ।।

सबसे पहले वालाजी ने छलांग मारी। उनके पीछे मेरी छलांग देखो। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरी बात मानना। मैं वालाजी से अच्छी छलांग लगाऊंगी।

जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी रे।
निसंक अंग संकोडीने ठेक्या, जांऊं ते हूं वलिहारी रे।। ४ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी छलांग लगा रहे हैं। उन्होंने अच्छी छलांग लगाई। वह अंग को सिकोड़ कर कूदे। मैं उन पर बलिहारी होती हूं।

Nijanand App

हांऊ हांऊ रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधो लडसडतां रे।
एवा तो ठेक अमे सहु कोई देतां, सेहेजे रामत करतां रे।।५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, अरे-अरे! सखियो! तुम वालाजी की छलांग की तारीफ करती हो। इन्होंने तो लड़खड़ाती हुई छलांग लगाई है। ऐसी छलांग तो हम सब साधारण खेल में ही लगा लेते हैं।

रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे।
एत्री तो फाल साथे केटलीक दीधी, तूं तो मोही उडाडतां रेत रे।।६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! रुको, तुमने वालाजी की छलांग की प्रशंसा की है। अब हमारी छलांग भी देखो। ऐसी छलांगें तो सुन्दरसाथ ने कितनी ही कूद डाली हैं। तुम तो सिर्फ रेत उड़ाने में ही मोहित हो गईं।

कोणे हंसिए कोणे वखाणिए, ए रामत थई अति रंग रे।
एणी विधे दीधां अमे ठेक, मारा वालाजीने संग रे।।७ ।।

किसकी हंसी और किसकी प्रशंसा करें? यह खेल तो अति अच्छा हुआ। इस तरह की छलांग वालाजी के साथ मैंने भी लगाई।

ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे रे।
रूडी रामत इंद्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे रे।।८ ।।

इस रामत को देखकर, चलो, अब नृत्य की रामत करें। जिसमें श्री इन्द्रावतीजी की अच्छी रामत देखकर सुन्दरसाथ और वालाजी भी रीझ जाएं।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ५८२ ॥

राग कल्याण

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी रे, अमने जोयानी खांत।
साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेख देखी एक भांत।।१ ।।

हे प्राण-वल्लभ! अब आप नृत्य करें तो हमें देखने की इच्छा है। आपका विशेष भेष देखकर सब साथ खुश हो रहे हैं।

तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार।
तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे स्वर पूरूं रसाल।।२ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! स्त्रियां नाच अच्छा नाचती हैं। इसलिए आप नाचो। तुम प्रेम भरे गीत गाओ। मैं तुम्हारे साथ मधुर स्वर मिलाऊंगा।

सुणो सुन्दर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाय।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय।।३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे प्राण-वल्लभ! सुनो, हम चाहती हैं कि आप पहले बताओ नाचा कैसे जाता है? हमारी खुशी अंग में समाती नहीं है।

जेणी सनंधे पांउं भरो, अने अंग वालो नरम।
भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचूं फरूं तेम।।४ ।।

जिस तरह से आप पैर चलाएंगे, अंग को मोड़ेंगे, भमरी (भंवर) फिरेंगे। हम भी देखकर वैसे ही नाचेंगी और उसी तरह फिरेंगी।

Nijanand App